.....ओमशांति प्रातःक्लास 11–7–67

बाप बैठ समझाते हैं। इस शरीर का मालिक है आत्मा। यह पहले2 समझना चाहिए ; क्योंकि अभी बच्चों को ज्ञान मिला है। पहले2 तो समझना है कि हम आत्मा हैं। इस शरीर का हम मालिक हैं। शरीर आत्मा का मालिक नहीं है। शरीर से आत्मा काम लेती है। पार्ट बजाती है। ऐसे2 खयालात कोई और को आते नहीं हैं ;क्योंकि वो देहअभिमानी हैं। यह पर तो यही खयाल में बिठाया जाता है कि मैं आत्मा हूँ,यह मेरा शरीर है। मैं परमपिता परमात्मा की संतान हूँ। यही याद बार2 भूल जाती है। यह पहले पूरा याद करना चाहिए। यात्रा पर जब जाते हैं तो कहते हैं कि चलते ही रहो। तुमको भी याद की यात्रा पर चलते ही रहना है। माना याद करना है। याद नहीं करते है। तो गोया कि यात्रा पर ही नहीं चलते हैं। देहअभिमान आता है। देहअभिमान से कुछ ना कुछ विकर्म हो जाते हैं। ऐसे भी नहीं कि मनुष्य सदैव विकर्म करते ही रहते हैं। फिर भी कमाई तो बंद हो जाती है ना। इसमें जितना भी हो सके याद की यात्रा में ढीला नहीं पड़ना चाहिए। एकांत में बैठकर अपने साथ विचार–सागर–मंथन करके प्वाइंट्स निकालनी होती है। कितना समय हम बाबा की याद में रहते हैं। मीठी चीज की याद आती ही रहती है ना। कुमार को कन्या मिलती है तो वो बहुत मीठी चीज हो जाती है। कितने लव से याद करते हैं। देह में लव जाता है। बच्चों को समझाया है कि सभी मनुष्य मात्र एक/दो को नुकसान ही करने वाले हैं। सिर्फ टीचरों की ही बाबा सराहा करते हैं कि उनमें कोई2 टीचर खराब भी होते हैं। नहीं तो टीचर माना मैनर्स सिखाने वाला। जो रिलीजस माइंड अच्छा स्वभाव होता है उनकी फिर चलन भी अच्छी होती है। बाप आकर शराब आदि पीते हैं तो बच्चों को भी रंग लग जाता है। इसको ही कहा जाता है खराब शैतानी संग ;क्योंकि रावण राज्य है ना। रामराज्य था जरूर ;परंतु वो कैसे था, वो वंडरफुल बातें मीठे2 बच्चों तुम्हीं जानते हो। स्वीट2 स्वीटेस्ट कहा जाता है। बाप की याद में रहकर ही तुम पवित्र बनते हो और बनाते हो। बाप पतित सृष्टि में आते हैं। सृष्टि में मनुष्य ही रहते हैं। जलमई कोई सृष्टि थोड़े ही कहेंगे। सृष्टि में मनुष्य ,जनावर,खेती–बाड़ी आदि सब कुछ होता है। मनुष्य के लिए तो सब कुछ चाहिए ना। शास्त्रों मं प्रलय का वृत्तांत ही रांग है। प्रलय होती ही नहीं है। यह सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है। बच्चों को बाद से लेकर अंत तक सारा याद रखना है। मनुष्यों को तो अनेक प्रकार के चित्र याद आते हैं। मेल मिलाखड़ा (याद) आता है। वो सब हैं हद के। तुम्हारी है बेहद की याद। बेहद की खुशी ,बेहद का धन। बेहद का बाप है ना। हद के बाप से हद का ही मिलता है। बेहद के बाप से बेहद का सुख मिलता है। सुख होता ही है धन से। धन तो वहां पर अपार है। सब कुछ सतोप्रधान है वहां। तुम्हारी बुद्धि में है कि हम सतोप्रधान थे। फिर बनना है। यह भी तुम अभी ही जानते हो। मनुष्य तो घोर अंधेरे में हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। स्वीट–स्वीट–स्वीटेस्ट है ना। इससे भी स्वीट होने वाले हैं। वो ही उंच पद पावेंगे। स्वीटेस्ट तो वो है जो बहुतों का कल्याण करते हैं। बाप भी स्वीटेस्ट है तब तो सबका कल्याण करते हैं। कोई माखी वा चीनी आदि को स्वीटेस्ट नहीं कहा जाता है। यह तो मनुष्य की चलन पर कहा जाता है। कहते हैं ना यह स्वीट चाइल्ड है। सतयुग में कोई भी ऐसे शैतानी की बात होती नहीं। इतना उंच पद जो पाते हैं तो जरूर इतना उंच पुरुषार्थ भी किया होगा ना। तुम अभी नई दुनियां को जानते हो। तुम्हारे लिए तो जैसे कि कल ही नई दुनियां सुखधाम होगी और कलियुगी मनुष्यों के लिए 40/50हजार वर्ष तक अभी कलियुग दूर है। उनको पता ही नहीं है कि शांति कब थी। कहते हैं कि विश्व में शांति हो। तुम बच्चे जानते हो कि विश्व में शांति थी। जो ही अभी फिर तुम स्थापन कर रहे हो। अभी (यह)बातें सबको समझावें कैसे?कहते हैं ना सेमिनार करें। ऐसी2 प्वाइंट्स निकालनी चाहिए जिसकी कि बहुत चाहना हो मनुष्यों को। विश्व में शांति के लिए शोर मचाते रहते हैं ;क्योंकि अशांति बहुत है। यह ल.ना. का चित्र ..... देना है। इनका जब राज्य था तो विश्व में शांति

थी। उनको ही हैवेन डीटी वर्ल्ड कहा जाता है। वहां पर विश्व में शांति 5000वर्ष पहले। यह बातें और कोई नहीं जानते हैं। यह है मुख्य बात। सब आत्मायें मिलकर कहते हैं कि विश्व में शांति कैसे स्थापन हो। सभी आत्मायें पुकारती हैं और तुम बच्चे यहां पर पुरुषार्थ कर रहे हो। विश्व में शांति स्थापन करनी है। बोलो भारत में शांति थी ना। सतयुग में शांति थी और कलियुग में अशांति है ,क्यों?क्योंकि अनेक राज्य है। माया का राज्य है। भक्ति का भी (पाम्प)है। दिन प्रतिदिन वृद्धि होती ही जाती है। मनुष्य भी मेलों–मिलाखड़ों पर जाते हैं तो समझते हैं ना कि जरूर कुछ पुण्य होगा। अब तुम समझते हो कि इससे कोई पावन बन नहीं सकते हैं। पावन बनने का रास्ता मनुष्य तो कोई बता नहीं सकते हैं। पतित–पावन एक ही बाप है। दुनियां एक ही है। सिर्फ उसको ही नई–पुरानी कहा जाता है। नई दुनियां में नया भारत ,नई देहली कहते हैं। जरूर है कि नई देहली तो नये भारत में ही होगी ना। वहां पर तो सब कुछ नया है। यह मथुरा,वृन्दावन आदि कोई नये नहीं हैं। नई होनी है। जिसमें ही फिर नया राज्य होगा। यहां पर तो पुरानी दुनियां में पुराना ही राज्य है। पुरानी और नई दुनियां किनको कहा जाता है यह तुम्हीं जानते हो। मनुष्य तो समझते हैं कि 40हजार वर्ष के बाद नई दुनियां होगी। अज्ञान की नींद में हैं ना। अभी तुम बच्चे जानते हो कि भक्तिमार्ग का कितना प्रस्ताव है। उनको कहा जाता है अज्ञान। ज्ञान सागर एक बाप है। बाप तुमको ऐसे नहीं कहते हैं कि राम2 कहो वा ऐसे2 करो। नहीं, बच्चों को तो समझाया जाता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है। यही एज्युकेशन तुम पा रहे हो। इसका नाम ही है रुहानी एज्युकेशन। स्प्रीचुअल नालेज। उसका अर्थ भी कोई नहीं जानते हैं। ज्ञान सागर तो एक ही बाप को कहा जाता है ना। वो है स्प्रीचुअल नालेजफुल फादर। तम (रूहों) से बातें करते हो। रुहानी रूह पढ़ाते हैं। मनुष्य तो जिस्मों से बात करते हैं। रुहानी रूह पढ़ाते हैं। तो बाप तो रूहों से ही बातें करते हैं ;परंतु वो भी तो कोई शास्त्र में नहीं है ;क्योंकि गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है तो मनुष्य कैसे समझें?तुम बच्चे समझते हो कि रुहानी बाप पढ़ाते हैं यह स्प्रीचुअल नालेज। शास्त्रों में स्प्रीचुअल नालेज है नहीं। यह तुमको बाप से ही मिलती है। रुहानी नालेज को ही स्प्रीचुअल नालेज कहा जाता है। उनके पास जो नालेज है वो कोई मनुष्य पास नहीं है। बाबा ही स्प्रीचुअल फादर,सुप्रीम रूह है। तुम बच्चे जानते हो कि आत्मा बिंदी है। वो हमको पढ़ाते हैं। हम आत्माओं का बाप पढ़ा रहे हैं। तो भूलना नहीं चाहिए। हम आत्माओं को जो नालेज मिलती है हम फिर दूसरी आत्माओं को भी देते हैं। यह नालेज तब बुद्धि में ठहरेगी जबकि अपने को आत्मा समझ बाप की याद में रहेंगे। याद में बहुत बच्चे झट देहअभिमान में आ जाते हैं। देहीअभिमानी बनने की अभी प्रैक्टिस करनी है। हम आत्मा इनको सौदा देती हूँ। हम आत्मा ही व्यापार करते हैं। अपने को आत्मा समझकर बाप को याद करते रहने में ही फायदा है। आत्मा को ही ज्ञान है कि हम यात्रा पर हैं। कर्म तो करना ही है। बच्चों आदि को भी सम्भालना ही है। धंधा आदि भी करना है ;परंतु धंधे में भी याद रहे कि मैं आत्मा हूँ। आत्मा को ही सौदा दे रही हूँ। यही बड़ा मुश्किल है। बाप कहते हैं कि कोई भी उल्टा काम कब नहीं करो। कोई पूछते हैं कि बाबा हमको झूठ बोलना पड़ता है। दो के बदले में हम चार ले लेते हैं। बाबा कहते हैं कि यह बड़ा पाप नहीं है। यह तो बहुत छोटी सी बात है। आजकल की तो दुनियां ही झूठी है। सबसे बड़ा पाप है विकार....। वो ही बड़ा तंग करता है। कोई खूबसूरत को देखा तो बस उनकी ही याद आती रहेगी। बाबा के पास ऐसे2 समाचार लिखते हैं कि तुम सुनो तो वंडर लगे। सेंटर पर आते हैं समझने लिए फिर पढ़ाने वाले टीचर ही फिदा हो जाते हैं। उनको जाकर कहते हैं कि मेरे से शादी करेगी?उनको गुस्सा लगा तो थप्पड़ मार दिया। वो फिर दूसरे सेंटर पर जाते हैं। ऐसे2 कामेषु डेमफुल होते हैं। एक सेंटर से मार खाकर दूसरे पर जाते हैं। ऐसे को तो जो मजबूत माता हो वो

ऐसा चमाट मारे जो लाल हो जावे। भाग जावे। फिर दूसरे सेंटर पर जाकर वहां भी ऐसे ही चमाट मारकर भगवाना चाहिए। काम तो देखो कितना शैतान है। दुनियां में झूठ तो बहुत है ना। सबसे बड़ी झूठ बोली है व्यास भगवान ने। मनुष्य ऐसी बातें सुनेंगे तो क्या समझेंगे। एसी2 कहानियां बैठ बनाई हैं। हैं तो झूठी ही ना। भगवान अगर इतना झूठ बोले तो मनुष्य कितना झूठ बोलते होंगे। द्वापर से लेकर यह शास्त्र शुरू होते हैं जब शैतानी राज्य होता है। फिर यहां पर तुम बच्चों को पावन बनना है। रक्षाबंधन भी यहां.....पाई–पैसे की राखी मिलती थी। ब्राह्मण लोग जाकर राखी बांधते थे। आजकल तो राखियां भी कैसी2 फैन्सी बनाते हैं। वास्तव में है अभी की बात। तुम बाप से प्रतिज्ञा करते हो कि हम कब विकार में नहीं जावेंगे। आप से विश्व का मालिक बनने वर्सा मिलता है। बाप कहते हैं 63जन्म विषय वैतरणी नदी में गोते खाये हैं। अब तुमको क्षीरसागर में ले चलते हैं। सागर कोई भी है नहीं। ..... तुमको शिवालय में ले जाते हैं। वहां पर तो अथाह सुख है। अभी यह अंतिम जन्म है। आत्माओं पवित्र बनो। क्या बाप का कहना नहीं मानोगे?ईश्वर तुम्हारा बाप कहते हैं कि मीठे2 बच्चों विकार में नहीं जाओ। जन्म जन्मांतर के पाप सिर पर हैं। वो मुझे याद करने पर ही भस्म होंगे। कल्प पहले भी यह तुमको शिक्षा दी थी। बाप गारंटी तभी करते हैं जबकि तुम भी गारंटी करते हो कि बाबा हम आपको याद करते रहेंगे। इतना याद करते रहो जो कि शरीर ही का भान नहीं रहे। सन्यासियों में भी कोई तो बहुत तीखे ब्रह्म ज्ञानी होते हैं। वो भी ऐसे ही बैठे2 शरीर छोड़ते हैं। यहां पर तो तुमको बाप श्रंगारते हैं। समझाते हैं कि पावन बनकर जाना है। वो तो अपनी ही मत पर चलते हैं। ऐसे नहीं कि वो शरीर छोड़कर कोई मुक्ति जीवनमुक्ति में जाते हैं, नहीं। आते तो फिर भी यहां पर ही हैं ;परंतु उनके फालोवर्स समझते हैं कि वो निर्वाण गया। बाप समझाते हैं कि एक भी वापस नहीं जा सकता है। कायदा ही नहीं है। झाड़ वृद्धि को जरूर पाना है। अभी तुम संगमयुग पर बैठे हो। और मनुष्य सभी हैं कलियुग में। तुम दैवी सम्प्रदाय बन रहे हो। वो हैं आसुरी सम्प्रदाय में। जो तुम्हारे धर्म के होंगे वो आते जावेंगे। दैवी सम्प्रदायों का भी वहां पर सिजरा है ना। यहां बदली होकर फिर धर्मों में चले गये हैं। नहीं तो वहां पर जगह कौन भरेगा?जरूर वो अपनी जगह भरने फिर आ जावेंगे। यह बहुत महीन बातें हैं कि वो जगह कौन भरेगा?बहुत अच्छे2 भी आवेंगे जो कि एक दूसरे धर्म में कनवर्ट हो गये होंगे। तो वो फिर अपनी जगह पर आ जावेंगे, जो उपर में जगह मिली हुई है। वहां पर ही जाना होगा। तुम्हारे पास तो मुसलमान आदि भी आते हैं ना। बड़ी खबरदारी रखनी होती है। झट कहेंगे कि यहां पर दूसरे धर्म वाले कैसे आते हैं। इमरजेंसी में तो बहुत को पकड़ते हैं। फिर पैसे मिलने पर छोड़ देते हैं। फिर पैसे मिलने पर छोड़ देते हैं। रावण राज्य है ना। जो कल्प पहले हुआ था वो तुम (अभी)देख रहे हो। कल्प पहले भी ऐसा ही हुआ था जबकि बाप बच्चों को नालेज देते हैं। उनके लिए है कलियुग। तुम्हारे लिए है पुरुषोत्तम संगमयुग। तुम अभी मनुष्य से देवता उत्तम पुरुष बनते हो। यह है सर्वोत्तम ब्राह्मणों का कुल। इस समय बाप और बच्चे रुहानी सेवा पर हैं। कोई को बहुत धनवान यही रुहानी सेवा है। कितना कल्याण करना होता है। बाप कल्याण करते हैं तो बच्चों को भी मदद देनी चाहिए। जो बहुतों को रास्ता बताते हैं वो बहुत उंच पद पाते हैं। पुरुषार्थ तो जोर से करवाया जाता है फिर जो फल निकलता है वो कहा जाता है कि ड्रामाप्लान अनुसार। कल्प पहले मिसल ही है। रिस्पांसिबिल्टी बाप के उपर है। बच्चों को कहते हैं कि फिक्र मत करो। नहीं सुनते हैं तो क्यों करोगे?सभी बंदरों को थोड़े ही चाय आदि पीना सिखाया जाता है। उनमें भी अलग ही क्वालिटी होती है जिनको सिखाते हैं। यहां पर भी ऐसे ही हैं। इस कुल का नहीं होगा तो भल कितना भी माथा मारो कोई कम तुम्हारा माथा खावेंगे ,कोई जास्ती। बाबा ने कहा है जब दुःख बहुत आता जावेगा तो फिर भी आवेंगे। .....

(यह मुरली अधूरी है)